खिलखिलाएगी मेरी बिटिया

टिमटिमाती
चिमनी की रोशनी में
अपनी परछाई से
लड़ रही है बिटिया
अनजाने में
अपने अस्तित्व से
संघर्ष कर रही है बिटिया
उसे नहीं मालूम
यह खेल उसकी
ज़िंदगी बनेगा
देखेंगी आंखें
किसी मंजिल को
तो घूंघट
दीवार बनेगा
बढ़ेंगे कदम
किसी राह को
तो पाज़ेब
बेड़ियां बनेंगी
उठेंगे हाथ
किसी संघर्ष को
तो कंगन
हथकड़ियां बनेगा
उस मंद रोशनी में
उसके चेहरे पर है
कितना तेज
विश्वास है
उसे जैसे
भविष्य की
रोशनियों पर
जब होगी
बिजली की रोशनी
घर में चारों ओर
देखेगी तब
अपने आपको
पहचानेगी
खुद को मेरी बिटिया
गुम होंगी, सारी
दीवारों, बेड़ियों
और हथकड़ियों की
परछाइयां
मुस्कराएगी, हंसेगी,
खिलखिलाएगी मेरी बिटिया।

—श्रीकांत वर्मा